भारत में मीडिया के बुरे दिन...शुरू होते हैं अब

क्या आप लोगों ने कभी खुद से यह सवाल किया कि भारत में अखबार, टीवी, पत्रिकाएं, रेडियो, सोशल मीडिया आप लोगों तक थोड़ी बहुत ही सही मामूली सूचनाएं ला रहे हैं, अगर उन्होंने ऐसा करना बंद कर दिया तो क्या होगा...। जवाब बहुत आसान है, आप उन मामूली सूचनाओं से वंचित हो जाएंगे। ...लेकिन जितना आसान यह जवाब है, दरअसल उतना है नहीं।

-रज्जन सैमोयूकि-

भारत में इमरजेंसी के दौर में इंदिरा गांधी ने जिस तरह प्रेस की आजादी का गला घोंटा था, अब उससे भी बुरा दौर मोदी राज में आ चुका है। अभी हाल ही में आपने बंगलौर की पत्रकार गौरी लंकेश की हत्या के बारे में पढ़ा होगा। इसके बाद त्रिपुरा में शांतनू भौमिक की हत्या कर दी गई। हिंदुस्तान टाइम्स अखबार से बॉबी घोष ने इस्तीफा दे दिया। इसी अखबार के सीईओ को नौकरी छोड़नी पड़ी। द इकोनॉमिक एंड पोलिटिकल वीकली (ईपीडब्ल्यू) पत्रिका के संपादक प्रंजय गुहा ठाकुरता के संपादक को इस्तीफा देना पड़ा।...एनडीटीवी न्यूज चैनल के बिकने की खबरें और उसे भाजपा समर्थक अजय सिंह द्वारा खरीदने की चर्चा आपने जरूर सुनी होंगी। इन्हीं खबरों के बीच में मजदूर मोर्चा के संपादक को जेल भेजने की खबर पता नहीं आप लोगों को मिली या नहीं।

ऊपर जितने नाम या संस्थान गिनाए गए...वह हाल की घटनाएं हैं। उससे पहले भी कई हत्याएं हुई, संपादकों-पत्रकारों को नौकरी छोड़नी पड़ी। ...भारतीय पत्रकारिता का यह परिदृश्य मोदी राज का है। यह सारे के सारे पत्रकार बस इतनी गलती कर रहे थे कि वो आप तक सही सूचनाएं पहुंचाने की हिम्मत दिखा रहे थे। मोदी राज सही सूचनाएं पहुंचाने के खिलाफ है। बंगलौर में गौरी लंकेश की हत्या इसलिए की गई कि वह आरएसएस से जुड़े संगठनों की गुंडागर्दी, अंधविश्वासों के खिलाफ जमकर लिखती थीं। दक्षिणपंथी उनके निशाने पर हमेशा रहे।

शांतनु भौमिक की हत्या उस वक़्त हुई, जब वह पश्चिमी त्रिपुरा में इंडिजीनस फ्रंट ऑफ त्रिपुरा (आईपीएफटी) और सीपीएम के ट्राइबल विंग टीआरयूजीपी के बीच संघर्ष को कवर कर रहे थे। लेकिन आपको क्या मालूम है कि आईपीएफटी भाजपा समर्थक नॉर्थ ईस्ट का संगठन है। आईपीएफटी के लोगों ने शांतनू भौमिक की हत्या कर दी। इसलिए कि वह आईपीएफटी की गुंडागर्दी को अपने चैनल पर लाइव दिखा रहे थे।

हिंदुस्तान टाइम्स अखबार एक पूंजीपति बिड़ला घराने का अखबार है। इसके संपादक बॉबी घोष ने गलती से यह जुर्रत कर दी थी कि उन्होंने इतिहासकार रामचंद्र गुहा का लेख छाप दिया था। वह लेख गौरी लंकेश पर है, जिसमें इतिहासकार गुहा ने आरएसएस पर तीखी टिप्पणियां की थीं। आमतौर पर हिंदुस्तान टाइम्स ऐसे लेख नहीं छाप रहा था। लेकिन बॉबी को वह गलती महंगी पड़ी। प्रधानमंत्री कार्यालय से जबर्दस्त आपत्ति हुई और अखबार की मालकिन शोभना भरतिया ने घुटने टेक दिया।

अगले दिन ही बॉबी से इस्तीफा मांगा गया। इसके बाद इस अखबार के उस सीईओ ने इस्तीफा दे दिया जो यहां 17 साल से काम कर रहा था। वजह यह थी कि भाजपा और प्रधानमंत्री कार्यालय हर उस जगह की पूरी तौर पर ऐसे लोगों की सफाई चाहता है जहां से उसे जरा भी अपने खिलाफ लिखे जाने या माहौल बनाए जाने का खतरा है। हालांकि यही अखबार मोदी का लंबा चौड़ा इंटरव्यू छाप चुका था जिसमें मोदी ने प्रेस की आजादी को भारत की आजादी के लिए महत्वपूर्ण बताया था लेकिन हाथी के दांत दिखाने और खाने के अलग-अलग होते हैं। वही अब हो रहा है।हिंदुस्तान टाइम्स पर कांग्रेसी अखबार होने की छाप रही है। लेकिन 2014 में जैसे ही सत्ता बदली, यह अखबार भाजपाई हो गया। लेकिन बॉबी घोष चूंकि पत्रकार थे इसलिए उनकी आत्मा मरी नहीं थी तो उन्होंने रामचंद्र गुहा के लेख को प्रकाशित कर दिया।

द इकोनॉमिक एंड पोलिटिकल वीकली के संपादक प्रंजय गुहा ठाकुरता ने अदानी ग्रुप के खिलाफ कोयला खदानों से जुड़ी एक रिपोर्ट प्रकाशित की थी। यह पत्रिका जैसे ही बाजार में आई, अगले दिन संपादक से इस्तीफा मांग लिया गया। पिछले लोकसभा चुनाव में अदानी ग्रुप भाजपा और मोदी के सबसे बड़े फाइनैंसर थे। अंबानी के बाद अगर किसी का नाम भाजपा को फाइनैंस करने के मामले में आता है तो वह अदानी का ही आता है।

इस पत्रिका से ऐसी उम्मीद कभी नहीं थी कि वह सरकार के आगे इस तरह घुटने टेक देगी। क्योंकि इसकी छवि हमेशा से साफ सुथरी रही है। कोयला खदानों के जिस घपले की रिपोर्ट इस पत्रिका ने छापी थी, उसी पर आगे और काम करते हुए विदेशी अखबार द गार्डियन ने हाल ही में एक बड़ी रिपोर्ट छापी, जिसमें अदानी का पूरा काला कारनामा छापा गया है। अदानी और मोदी की पहुंच इस अखबार तक नहीं है। इसलिए यह लोग उसका कुछ नहीं बिगाड़ सकते। लेकिन भारत के बेताज बादशाह भारत में सबकुछ कर सकते हैं।

एनडीटीवी के मालिक प्रणय राय भी एक पूंजीपति हैं और तमाम मुद्दों को अपनी सुविधा के अनुसार भुनाते रहे हैं। इसके अंग्रेजी चैनल की संपादक बरखादत्त का नाम राडिया टेप कांड में आया था। लेकिन एनडीटीवी हिंदी चैनल की छवि हमेशा से एक साफ सुथरे चैनल की रही है। इसके एंकर संपादक रवीश कुमार का इसमें बड़ा योगदान रहा है। रवीश कुमार की तीखी टिप्पणियों से सरकार बौखला जाती है।

हिंदी की पहुंच इस देश में सबसे ज्यादा है तो सरकार ने एनडीटीवी को ही खत्म करने की योजना बना डाली। हाल ही में भाजपा समर्थक छुटभैया पूंजीपति अजय सिंह ने एनडीटीवी के कुछ शेयर खरीदकर एक बड़ी हिस्सेदारी अपने पास कर ली। अजय सिंह स्पाइस जेट में भी डायरेक्टर है। अजय सिंह ने पिछले लोकसभा चुनाव में भाजपा के मीडिया कैंपेन को संभाला था। इसलिए भाजपा और मोदी की तरफ से उसे इशारा किया गया कि एनडीटीवी को तकनीकी रूप से ही मात देनी होगी, अगर हमने इसके खिलाफ कार्रवाई की तो बवाल हो सकता है। इसीलिए एनडीटीवी के शेयर अजय सिंह ने खरीद लिए।

शायद आप लोगों को याद नहीं होगा।...पिछले लोकसभा चुनाव के समय मीडिया में एक बड़ी घटना हुई थी। जिसका नोटिस लोगों ने नहीं लिया। टीवी 18 ग्रुप रातोंरात अंबानी समूह का हो गया था। इसके 700 पत्रकार अपनी नौकरी से हाथ धो बैठे थे। अंबानी ने टीवी 18 की पूरी हिस्सेदारी ख़रीद ली थी। तब इसके मुख्य चैनल आईबीएन सीएनएन को पत्रकार राजदीप सरदेसाई चला रहे थे। वह अंबानी के खिलाफ कई खबरें कर चुके थे और उनकी पत्नी सागरिका घोष जो उसी चैनल में थीं, वह भी अंबानी के खिलाफ लगातार लिख रही थीं। इन्हें वहां से इस्तीफा देना पड़ा।

टीवी 18 जब बिका तो बड़े-बड़े मीडिया हाउस को इसकी खबर तक नहीं थी। टाइम्स आफ इंडिया ग्रुप के अखबार

शेष पेज छह पर

फरीदाबाद में 50 हजार करोड़ का प्रॉपर्टी घोटाला

एसआरएस और पीयूष ग्रुप समेत कई इन्वेस्टरों ने रचा सारा खेल

मजदूर मोर्चा ब्यूरो

फरीदाबाद में रियल स्टेट का 50 हजार करोड़ रुपये का स्कैम चल रहा है। आला प्रशासनिक अधिकारी और भाजपा-कांग्रेस के नेता इसमें बराबर के साझीदार हैं। सारा मामला मुख्यमंत्री की जानकारी में है। यहां तक की सीएम विंडो पर शिकायतें भी दी गईं लेकिन इस घोटाले में शामिल लोगों का कुछ नहीं बिगड़ा।

देश में जब प्रॉपर्टी मार्केट में बहार आई हुई थी तो उस समय फरीदाबाद में एसआरएस ग्रुप और पीयूष ग्रुप बहुत तेजी से उभरे। इन लोगों ने कुछ जगहों पर अपने छोटे-मोटे प्रोजेक्ट बनाकर बाजार से पैसे उठाने का खेल शुरू किया। प्रॉपर्टी बिजनेस के धंधे का सीधा सा नियम है कि मुख्य निवेशक अपनी जेब से तो चवन्नी लगाता है लेकिन अपने रिश्तेदारों, दोस्तों से सबसे पहले निवेश कराता है। इसके बाद बाहर के लोग भी पैसे लगाने लगते हैं।

एसआरएस और पीयूष ग्रुप ने भी इसी नियम पर चले। फरीदाबाद प्रॉपर्टी मार्केट की इन दो बड़े ग्रुप ने भी अपने रिश्तेदारों, मित्रों और इन लोगों के जानने वालों से डेढ़ फीसदी से लेकर सवा दो-ढाई फीसदी तक के प्रति माह ब्याज पर पैसे लिए और सीधा अपने प्रोजेक्ट मे फाइनैंस में झोंक दिया। बदले में इन लोगों को हर महीने घर बैठे अपने निवेश किए गए पैसे की एवज में ब्याज लिफाफे में रखकर आने लगा। दोनों पार्टियां खुश। बल्लभगढ़ के कुछ लोगों ने अपनी जमीनें एसआरएस और पीयूष ग्रुप को बेची और जमीन से मिले पैसे भी उन्हीं ग्रुप में फाइनैंस कर दिए। मोटी कमाई के चक्कर में जमीन का पैसा तो डूब ही चुका है और ब्याज पर जो पैसे दिए थे वह भी मिलना बंद हो गए हैं।

बाजार की जो देनदारी की स्थिति

एसआरएस, पीयूष के अलावा और भी बहुत सारे निवेशक हैं जिन्हें बाजार से उठाया गया पैसा वापस करना है। उनकी सूची नीचे देखिए

ग्रुप का नाम	मालिक का नाम	बाजार का बकाया
एसआरएस	अमित जिंदल	20 हजार करोड़
पीयूष ग्रुप	अनिल गोयल	5000 करोड़
ओजोन ग्रुप	प्रवीन मंगला	500 करोड़
तरंग ग्रुप		500 करोड़
व्यक्तिगत निवेश	अमित मित्तल (बल्लभगढ़)	200 करोड़
व्यक्तिगत निवेश	रामेश्वर गोयल (सेक्टर 10)	200 करोड़
व्यक्तिगत निवेश	मदन गोयल (सेक्टर 9)	100 करोड़
व्यक्तिगत निवेश	विनय गर्ग उर्फ मामा (सेक्ट 9)	200 करोड़
व्यक्तिगत निवेश	महेंद्र गोयल (सेक्टर 7)	300 करोड़
व्यक्तिगत निवेश	बहुत सारे छोटे निवेशक	200 करोड़

पैसे नहीं, डायमंड ले जाओ

जांच से पता चलता है कि फरीदाबाद में रियल सेक्टर के पैसे को घुमाने का काम एसआरएस और पीयूष ग्रुप ही कर रहे थे। लेकिन जिस तरह नोएडा के आम्रपाली, जेपी ग्रुप व अन्य ने अपने पैसों को दूसरे धंधों में या राजनीतिक फंडिंग में इस्तेमाल किया, ठीक वही काम फरीदाबाद में एसआरएस और पीयूष ग्रुप ने भी किया। अभी जब इन्वेस्टर्स अपने पैसे मांगने एसआरएस, पीयूष, ओजोन या अन्य रियल्टी मालिकों के पास जा रहे हैं तो उनका सीधा सा जवाब होता है, पैसे नहीं हैं। इसके बदले डायमंड ले जाओ। कुछ लोगों ने गोल्ड मांगा तो उन्हे कहा गया कि डायमंड के अलावा उनके पास कुछ नहीं है। कुछ लोगों को चेक दिए गए, लेकिन वो बाउंस हो गए। पुलिस में एफआईआर कराई गई तो थानेदार की हिम्मत नहीं हुई कि वह अमित जिंदल या अनिल गोयल व उनके बेटों पर हाथ डाल सके।

कुछ लोगों ने फरीदाबाद के डीसी और एसएसपी से शिकायतें कीं, कुछ लोग व्यक्तिगत रूप से जाकर भी मिले। लेकिन आश्वासन के अलावा उन्हें कुछ नहीं मिला। सूत्रों का कहना है कि एसआरएस और पीयूष ग्रुप समेत तमाम रियल्टी सेक्टर वालों ने प्रशासनिक अफसरों का महीना बांध रखा है। हर महीने कई अफसरों के पास मोटी रकम पहुंचाई जाती है ताकि पुलिस या प्रशासन कोई एक्शन न ले सके। चूंकि मामला सारा दो नम्बर के पैसे का है तो अफसर इसका फायदा उठा रहे हैं। इन्वेस्टर्स अपनी मोटी रकम का हिसाब देने की स्थिति में नहीं है, इसलिए वह एफआईआर नहीं करा सकता। पुलिस जबानी शिकायतों पर कार्रवाई न करने के लिए स्वतंत्र है।

प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) के पास भी एसआरएस और पीयूष ग्रुप की शिकायतें पहुंची हुई हैं लेकिन ईडी तभी कार्रवाई कर सकती है जब पुलिस या अन्य कोई जांच एजेंसी उससे पहले इनकी जांच कर ले या फिर सरकार अपनी तरफ से पहल करके इनके खिलाफ जांच कराए। इसलिए शिकायतों के बावजूद ईडी अपनी तरफ से पहल नहीं कर रही है।

एसआरएस ग्रुप के मालिक ने छोटे इन्वेस्टरों से कहा कि मैं पिछले दस साल से तुम लोगों को कमा कर ब्याज के पैसे दे रहा था लेकिन बीच में तुम लोगों ने पचास पैसे की बेईमानी की है। उस पैसे का हिसाब दे जाओ और अपने पैसे ले जाओ। इसका जवाब किसी के पास नहीं है कि आखिर बीच के ये पचास पैसे किस चीज के हैं। कहा जा रहा है कि कुछ पैसों की मनी लॉन्ड्रिंग भी हुई है लेकिन इसके बारे में ठोस सूचना किसी के पास भी नहीं है।

नेता हैं या बाउंसर

कुछ इन्वेस्टरों ने बताया कि जब-जब वो लोग अमित जिंदल के पास अपने पैसे मांगने पहुंचे तो वहां फरीदाबाद के एक पूर्व मंत्री का बेटा और कुछ पहलवान बैठे हुए थे। उन्होंने पैसे मांगने वालों से कहना शुरू कर दिया कि जिंदल भाई साहब का उनके रहते हुए कोई कुछ बिगाड़ नहीं सकता। यह अपने आप में इशारा था कि जिंदल से कोई पैसे मांगेगा तो वह उसकी पिटाई करने के लिए बैठे हैं। बता दें कि यह पूर्व मंत्री कभी सैनिक कॉलोनी के प्रोजेक्ट से जुड़ा रहा है और अब उसका लड़का भी प्रॉपर्टी बिजनेस में है। यह तो हुई कांग्रेस की बात।

एक मौजूदा मंत्री और उसका बेटा भी एसआरएस, पीयूष ग्रुप व अन्य के मददगार बने हुए हैं। यह लोग प्रशासनिक अफसरों तक पैसे पहुंचवाने का काम करते हैं। यानी प्रॉपर्टी मार्केट लुटेरे नेताओं के जरिए प्रशासन के कृपापात्र बने हुए हैं। यह भाजपाई नेता भी प्रॉपर्टी के धंधे में है। फरीदाबाद में दो मजाक आम हो गए हैं कि किसी भी बड़ी बिल्डिंग पर हाथ रख दो, तुरंत पता चल जाता है कि मंत्री जी का इसमें हिस्सा या फिर उनका आशीर्वाद मिला हुआ है। दूसरा मजाक यह है कि प्रॉपर्टी मार्केट में दो नंबर धंधे में शहर के ज्यादातर वैश्य समुदाय के लोग हैं जो धोखाधड़ी कर रहे हैं लेकिन उन्हें बचाने वाले गुर्जर और जाट नेता बाकायदा संरक्षण दे रहे हैं। फरीदाबाद-पलवल जिले के बाकी भाजपा विधायकों की हालत यह हो गई है कि बेचारे आम जनता की तरह मंत्री और उसके बेटे के पास फरियाद लेकर गिड़गिड़ाने जाते हैं लेकिन उन्हें कोई मदद नहीं मिलती। इनमें से कुछ ने मुख्यमंत्री व भाजपा आला कमान तक शिकायतें पहुंचाई लेकिन हासिल कुछ नहीं हुआ।

रावल ग्रुप के नाम से शिक्षण संस्थान चलाने वाले एक पार्टनर का पैसा भी एसआरएस के पास फंसा हुआ है। वह जब अपना पैसा मांगने पहुंचे तो मंत्री और उनके गुर्गों ने धमका दिया। फरीदाबाद में इतनी अंधेरगर्दी कभी नहीं चली थी जितनी मंत्री और उसके गुर्गों ने पूरे शहर में की हुई है।

ऐसी सीएम विंडो का क्या फायदा

मुख्यमंत्री मनोहर लाल ने सीएम विंडो इसलिए शुरू कराई थी कि जनता की शिकायतें व परेशानियां सीधे उन तक और उनके सेल तक पहुंचेगी। शिकायतें खूब हो रही हैं लेकिन समाधान एक भी नहीं आया लेकिन कागजों में समाधान की डींगें मारी जा रही हैं। एसआरएस व पीयूष ग्रुप के खिलाफ भी सीएम विंडो पर शिकायतें पहुंची हुई हैं। लेकिन शिकायत करने वालों के पास आज तक एक लाइन की चिट्ठी तक नहीं आई कि उनकी शिकायतों की जांच की जा रही है या कराई जाएगी। मुख्यमंत्री ने उन शिकायतों को देखा भी लेकिन बेचारे अपनी कुर्सी बचाने के चक्कर में कुछ नहीं कर पा रहे हैं। किसी मुख्यमंत्री की ऐसी फर्जी ईमानदारी का फायदा क्या जब समाधान न हो।

इन मौतों का जिम्मेदार कौन है

पिछले दिनों एक छोटे प्रॉपर्टी डीलर ने खुदकुशी कर ली। उसने एक स्यूसाइड नोट छोड़ा था। जिसमें एसआरएस ग्रुप के मालिक के रिश्तेदार का नाम था। उस छोटे प्रापर्टी डीलर ने अपने चार-पांच करोड़ रुपये उस रिश्तेदार के जरिए एसआरएस में लगा रखे थे। उसका पूरा पैसा डूब गया। वह मांगने गया तो उसे धमकाकर भगा दिया गया। उसने मजबूरी में मौत को गले लगा लिया। पुलिस वालों ने स्यूसाइड दिखाकर एसआरएस के मालिक और उसके रिश्तेदार से मोटा पैसा वसूला। कुछ पैसे उस छोटे प्रॉपर्टी डीलर के परिवार को दिला दिए गए और मामला हमेशा के लिए खत्म हो गया।

प्रॉपर्टी के धंधे में जिनका पैसा डूब गया, आत्महत्या करने वाले कुछ प्रॉपर्टी डीलरों के नाम इस तरह हैं।

फरीदाबाद बस्सापाड़ा में रहने वाले अनुज गोयल उर्फ मोनू ने अपने खेड़ी रोड स्थित दफ्तर में जान दी। जुन्हैड़ा के रहने वाले दयाराम कौशिक ने मारुति कंपनी से वीआरएस लिया था। उन्हें फंड में जो पैसे मिले, उसे उन्होंने प्रॉपर्टी में लगा दिया। सारा पैसा डूब गया, दयाराम ने जान दे दी। नंगला गाजीपुर रोड पर बलरा उर्फ बल्ले का शव

शेष पेज चार पर